Table of Contents

1. कवि से परिचय
2. कविता सारांश
3. केंद्रीय भाव एवं विषय
4. महत्वपूर्ण उद्धरण एवं पंक्तियों की व्याख्या
5. पद्य संग्रह
6. अभ्यास प्रश्न
7. उत्तर कुंजी
8. शब्दावली

कवि से परिचय

गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' हिंदी के उन प्रमुख कवियों में से हैं जिन्होंने ब्रजभाषा में कविता लिखना प्रारंभ किया और खड़ी बोली के श्रेष्ठ कवियों में अपना स्थान बनाया। उनका जन्म 1883 में उत्तर प्रदेश के उ
'त्रिशूल' उपनाम भी मिला। उन्होंने राष्ट्र-प्रेम, किसान, मजदूर और सामाजिक कुरीतियों जैसे विषयों पर प्रभावशाली कविताएँ लिखीं। उनकी प्रमुख रचनाओं में 'त्रिशूल तरंग', 'राष्ट्रीय मंत्र', 'कृषक क्रंदन' शा

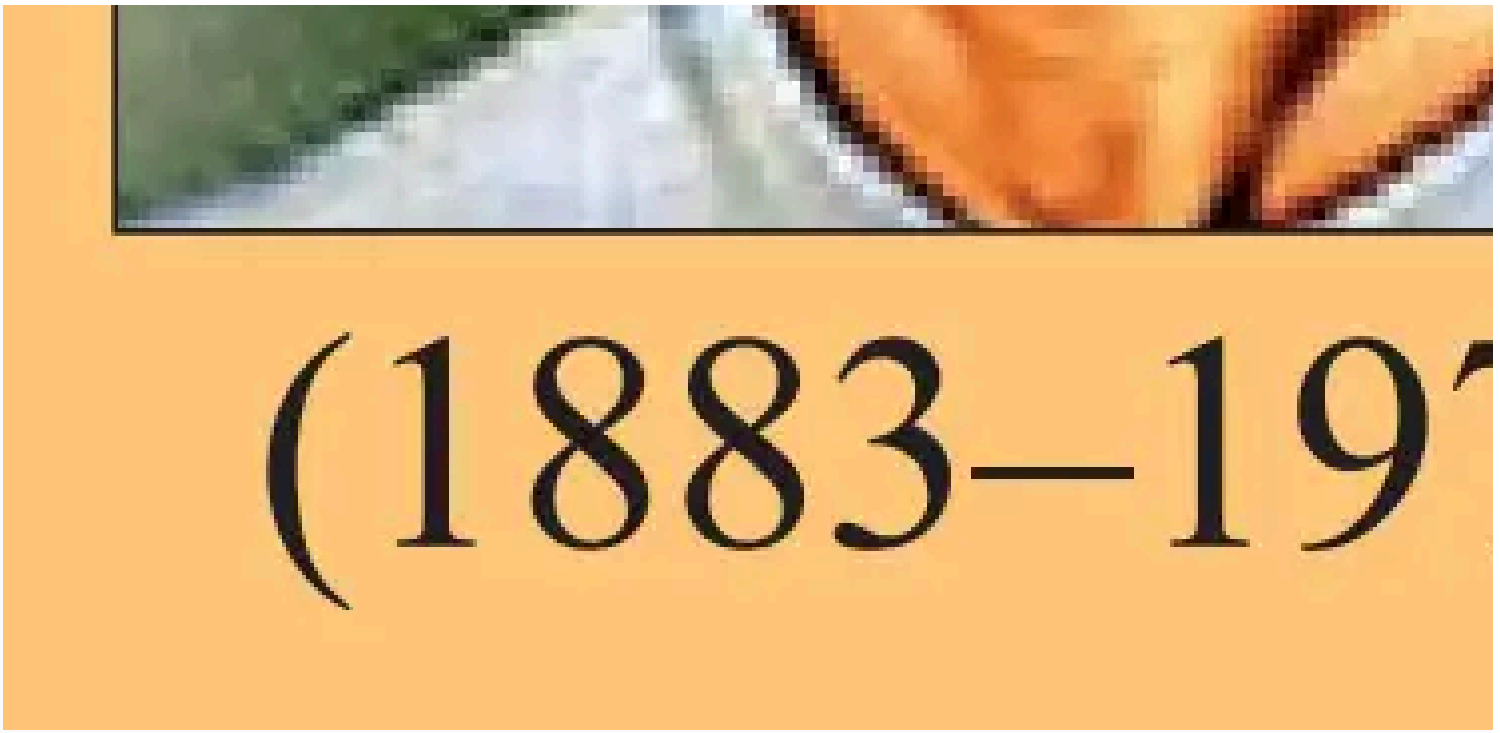

कविता सारांश

कविता 'स्वदेश' में कवि ने देशभक्ति की भावना को प्रमुखता से प्रस्तुत किया है। कविता में बताया गया है कि जिसके हृदय में स्वदेश के प्रति प्रेम नहीं है, वह पत्थर के समान कठोर है। जीवन में जो जोश औ सामाजिक सुधार के लिए प्रयास नहीं करता, उसका उद्धार संभव नहीं। कविता में देश के प्रति प्रेम, साहस, और सामाजिक चेतना की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

केंद्रीय भाव एवं विषय

इस कविता का मुख्य विषय देशभक्ति और सामाजिक जागरूकता है। कवि ने यह स्पष्ट किया है कि स्वदेश के प्रति प्रेम और साहस के बिना जीवन का कोई मूल्य नहीं है। साथ ही, जाति-उद्धार और सामाजि
गया है कि जो व्यक्ति अपने देश की मिट्टी, माता-पिता, और संस्कृति से प्रेम नहीं करता, वह जीवन में सफल नहीं हो सकता।

महत्वपूर्ण उद्धरण एवं पंक्तियों की व्याख्या

"वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।"
यह पंक्ति देशभक्ति की भावना की महत्ता को दर्शाती है। जो व्यक्ति अपने देश से प्रेम नहीं करता, उसका हृदय कठोर पत्थर के समान है।

"जो जीवित जोश जगा न सका, उस जीवन में कुछ सार नहीं।"
यहाँ जीवन में जोश और उत्साह की आवश्यकता बताई गई है। जो व्यक्ति उत्साह के बिना जीवन बिताता है, उसका जीवन निरर्थक है।

"जिससे न जाति-उद्धार हुआ, होगा उसका उद्धार नहीं।"
यह पंक्ति सामाजिक सुधार की आवश्यकता को दर्शाती है। जाति-उद्धार के बिना व्यक्ति का उद्धार संभव नहीं है।

"जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े, पाया जिसमें दाना-पानी।"
यह पंक्ति देश की मिट्टी और संसाधनों के प्रति प्रेम को दर्शाती है। जो व्यक्ति अपने देश की मिट्टी से जुड़ा होता है, वही सच्चा देशभक्त होता है।

पद्य संग्रह

वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।
जो जीवित जोश जगा न सका,
उस जीवन में कुछ सार नहीं।

जो चल न सका संसार-संग,
उसका होता संसार नहीं।
जिसने साहस को छोड़ दिया,
वह पहुँच सकेगा पार नहीं।

जिससे न जाति-उद्धार हुआ,
होगा उसका उद्धार नहीं।
जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रस-धार नहीं।

वह हृदय नहीं है पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।

जिसकी मिट्टी में उगे बढ़े,
पाया जिसमें दाना-पानी।
हैं माता-पिता बंधु जिसमें,
हम हैं जिसके राजा-रानी।।

जिसने कि खजाने खोले हैं,
नव रत्न दिये हैं लासानी।
जिस पर ज्ञानी भी मरते हैं,
जिस पर है दुनिया दीवानी।।

उस पर है नहीं पसीजा जो,
क्या है वह भू का भार नहीं।
निश्चित है निस्संशय निश्चित,
है जान एक दिन जाने को।

है काल-दीप जलता हरदम,
जल जाना है परवानों को।
सब कुछ है अपने हाथों में,
क्या तोप नहीं तलवार नहीं।

वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

अभ्यास प्रश्न

स्तर 1 – सरल

- कवि गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' का जन्म कहाँ हुआ था?
- कविता 'स्वदेश' का मुख्य विषय क्या है?
- "वह हृदय नहीं है पत्थर है" पंक्ति का क्या अर्थ है?

स्तर 2 – मध्यम

- कविता में देशभक्ति की भावना कैसे व्यक्त की गई है? उदाहरण सहित समझाइए।
- जाति-उद्धार का कवि ने कविता में क्या महत्व दिया है?

स्तर 3 – कठिन

- कविता 'स्वदेश' में साहस और जीवन के सार का क्या संबंध है? विस्तार से लिखिए।
- कवि ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अपनी कविताओं में क्या संदेश दिया है? अपने उत्तर को कविता के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कुंजी

स्तर 1 – सरल

- उत्तर: गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव जनपद में हुआ था।
- उत्तर: कविता 'स्वदेश' का मुख्य विषय देशभक्ति और स्वदेश प्रेम है।
- उत्तर: इसका अर्थ है कि जिसका हृदय स्वदेश के प्रति प्रेम से रहित है, वह पत्थर के समान कठोर है।

स्तर 2 – मध्यम

- उत्तर: कविता में देशभक्ति की भावना हृदय की तुलना पत्थर से कर के और स्वदेश प्रेम की आवश्यकता बताकर व्यक्त की गई है। उदाहरण के लिए, "वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्य
- उत्तर: जाति-उद्धार को कवि ने सामाजिक सुधार के लिए आवश्यक बताया है। कविता में कहा गया है कि जिसके हृदय में जाति-उद्धार की भावना नहीं है, उसका उद्धार संभव नहीं।

स्तर 3 – कठिन

- उत्तर: कविता में साहस को जीवन के सार के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जो व्यक्ति साहस छोड़ देता है, वह जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता। साहस के बिना जीवन निरर्थक है।
- उत्तर: कवि ने सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता और सुधार की आवश्यकता पर बल दिया है। उन्होंने कहा है कि जाति-उद्धार के बिना समाज का उद्धार संभव नहीं। यह संदेश कविता के मा

शब्दावली

- **स्वदेश:** अपना देश, मातृभूमि।
- **जाति-उद्धार:** सामाजिक जाति व्यवस्था में सुधार।
- **रस-धार:** भावों की प्रवाहमान धारा।
- **साहस:** हिम्मत, वीरता।
- **मिट्टी:** धरती, भूमि।
- **परवान:** तितली या किसी कार्य के लिए समर्पित व्यक्ति।